Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

A Referred Peer Review Research Journal

Vindhyan Bloom

ISSN-2319-8478 Vol-15 Issue-3, June 2026

Manuscript Information	*Research Paper*	*Paper No. VBRP-32*

आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान का समन्वय : भारतीय परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

डॉ. अंजना खेर, *सहायक प्राध्यापक, प्रधानममंत्री कॉलेज ऑफ ,एक्सिलेंस, शासकीय माधव महाविधालय उज्जैन (म.प्र.)*

सारांश

वर्तमान समय में मानव सभ्यता तीव्र तकनीकी विकास के दौर से गुजर रही है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट, डिजिटल तकनीक, जैव प्रौद्योगिकी तथा आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधानों ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। दूसरी ओर, पारंपरिक ज्ञान सदियों से मानव समाज को प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता रहा है। भारतीय समाज में कृषि, जल संरक्षण, चिकित्सा, वास्तुकला तथा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित समृद्ध पारंपरिक ज्ञान उपलब्ध है।

यह शोध पत्र आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान के समन्वय का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि दोनों के समन्वय से सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक समृद्धि को कैसे बढ़ावा दिया जा सकता है। शोध में भारतीय ज्ञान प्रणाली के विभिन्न उदाहरणों का विश्लेषण करते हुए यह दर्शाया गया है कि आधुनिक तकनीक यदि पारंपरिक ज्ञान के साथ संतुलित रूप में उपयोग की जाए तो यह विकास को अधिक टिकाऊ और मानव–केंद्रित बना सकती है।

मुख्य शब्द :आधुनिक तकनीक, पारंपरिक ज्ञान, भारतीय ज्ञान प्रणाली, सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण

1.प्रस्तावना

मानव सभ्यता के विकास में ज्ञान और तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्राचीन काल से ही मानव ने प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए जीवनयापन के विभिन्न उपाय विकसित किए। भारतीय सभ्यता विशेष रूप से अपनी वैज्ञानिक दृष्टि, पर्यावरणीय चेतना तथा पारंपरिक ज्ञान के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध रही है। जल संरक्षण के पारंपरिक साधन, आयुर्वेद, योग, जैविक कृषि तथा सामुदायिक जीवन की अवधारणा भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ हैं।

21 वीं सदी में विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, रोबोटिक्स, उपग्रह तकनीक तथा जैव प्रौद्योगिकी ने मानव जीवन को नई दिशा प्रदान की है। हालांकि, तकनीकी विकास के साथ कई गंभीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं, जैसे पर्यावरण प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन तथा सामाजिक असमानता।

ऐसी स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि आधुनिक तकनीक को पारंपरिक ज्ञान के साथ समन्वित किया जाए। पारंपरिक ज्ञान प्रकृति के संरक्षण तथा संसाधनों के संतुलित उपयोग पर आधारित है, जबकि आधुनिक तकनीक दक्षता और नवाचार प्रदान करती है। दोनों का समन्वय सतत विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हो सकता है।

2.अध्ययन के उद्देश्य :

1. आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. भारतीय परिप्रेक्ष्य में पारंपरिक ज्ञान की उपयोगिता का अध्ययन करना।
3. सतत विकास में आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान के समन्वय की भूमिका का विश्लेषण करना।
4. समन्वय से संबंधित चुनौतियों एवं संभावनाओं का अध्ययन करना।
5. भविष्य के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

3.शोध पद्धति :–

यह अध्ययन द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। शोध के लिए विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों, पर्यावरणीय अध्ययनों तथा भारतीय ज्ञान प्रणाली से संबंधित साहित्य का उपयोग किया गया है। अध्ययन विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित है।

4.पारंपरिक ज्ञान की अवधारणा:–

पारंपरिक ज्ञान वह ज्ञान है जो किसी समुदाय द्वारा लंबे अनुभव, अवलोकन तथा सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से विकसित किया गया हो। यह ज्ञान पीढ़ी–दर–पीढ़ी मौखिक अथवा व्यवहारिक रूप से हस्तांतरित होता है। भारतीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का आधार प्रकृति और मानव के बीच संतुलन स्थापित करना रहा है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में पर्यावरण संरक्षण, जल प्रबंधन, औषधीय पौधों तथा कृषि संबंधी विस्तृत जानकारी मिलती है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

पारंपरिक ज्ञान की विशेषताएँ :

स्थानीय परिस्थितियों पर आधारित
पर्यावरण–अनुकूल
सामुदायिक सहभागिता पर आधारित
कम लागत और टिकाऊ
सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा हुआ

5.आधुनिक तकनीक की अवधारणा :–

आधुनिक तकनीक विज्ञान और नवाचार पर आधारित वह प्रणाली है जो मानव जीवन को सरल, तेज और प्रभावी बनाती है। इसमें कंप्यूटर, इंटरनेट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, मशीन लर्निंग, उपग्रह प्रणाली, डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा जैव प्रौद्योगिकी शामिल हैं।

आधुनिक तकनीक के प्रमुख क्षेत्र :

सूचना एवं संचार तकनीक
कृषि तकनीक
स्वास्थ्य तकनीक
ऊर्जा तकनीक
पर्यावरण निगरानी प्रणाली

आधुनिक तकनीक ने उत्पादन क्षमता बढ़ाई है, लेकिन इसके कारण प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन भी हुआ है। इसलिए तकनीकी विकास को पर्यावरणीय दृष्टि से संतुलित करना आवश्यक है।

6.भारतीय ज्ञान प्रणाली और पर्यावरणीय दृष्टिकोण :–

भारतीय ज्ञान प्रणाली में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। वेदों, उपनिषदों तथा पुराणों में पृथ्वी, जल, वायु और वनस्पतियों के संरक्षण पर विशेष बल दिया गया है।उदाहरण :–

- वृक्षों की पूजा
- नदियों को पवित्र मानना
- पवित्र उपवन
- वर्षा जल संचयन की पारंपरिक प्रणालियाँ

भारतीय ज्ञान प्रणाली का मूल उद्देश्य मानव और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखना है।

7.आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान का समन्वय :–

1.कृषि क्षेत्र में समन्वय :–

भारत कृषि प्रधान देश है। पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ जैविक और पर्यावरण–अनुकूल रही हैं। आधुनिक तकनीक के माध्यम से इन पद्धतियों को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।उदाहरण :–

- ड्रोन द्वारा खेतों की निगरानी
- मिट्टी परीक्षण तकनीक
- पारंपरिक बीजों का संरक्षण
- जैविक खेती के साथ आधुनिक सिंचाई प्रणाली

इस समन्वय से उत्पादन बढ़ने के साथ–साथ भूमि की उर्वरता भी सुरक्षित रहती है।

2. जल संरक्षण में समन्वय :–

भारत में प्राचीन काल से बावड़ी, तालाब, कुएँ और जोहड़ जैसी जल संरक्षण प्रणालियाँ प्रचलित रही हैं। आधुनिक तकनीक के माध्यम से इनका पुनर्जीवन किया जा सकता है।आधुनिक तकनीकों का उपयोग :–

- GIS मैपिंग
- रिमोट सेंसिंग
- वर्षा जल संचयन प्रणाली
- स्मार्ट जल प्रबंधन

राजस्थान और गुजरात के कई क्षेत्रों में पारंपरिक जल संरचनाओं को आधुनिक तकनीकों से जोड़कर जल संकट कम किया गया है।

3. स्वास्थ्य क्षेत्र में समन्वय :–

भारतीय आयुर्वेद और योग विश्वभर में प्रसिद्ध हैं। आधुनिक चिकित्सा अनुसंधान के माध्यम से इनके वैज्ञानिक आधार को मजबूत किया जा रहा है।
प्रमुख उदाहरण :–

- आयुर्वेदिक औषधियों का वैज्ञानिक परीक्षण • योग और मानसिक स्वास्थ्य • डिजिटल हेल्थ प्लेटफॉर्म • टेलीमेडिसिन सेवाएँ

Covid–19 महामारी के दौरान आयुर्वेद और योग की उपयोगिता को व्यापक रूप से स्वीकार किया गया।

4. पर्यावरण संरक्षण में समन्वय :–

पारंपरिक समाजों में वन संरक्षण की मजबूत परंपरा रही है। आधुनिक तकनीकों के माध्यम से जैव विविधता संरक्षण को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।उदाहरण :–

- सैटेलाइट द्वारा वन निगरानी • ड्रोन तकनीक • जैव विविधता डेटाबेस • सामुदायिक वन प्रबंधन

5. ऊर्जा क्षेत्र में समन्वय :–

भारत में पारंपरिक रूप से सौर ऊर्जा और प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग पर बल दिया जाता रहा है। आधुनिक तकनीक ने नवीकरणीय ऊर्जा के क्षेत्र में नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं।उदाहरण:–

- सौर ऊर्जा संयंत्र •बायोगैस तकनीक • ग्रामीण क्षेत्रों में सोलर लाइट • ऊर्जा संरक्षण तकनीक

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

8.आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान के समन्वय के लाभ :–

आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान का समन्वय आज के समय में सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण, कृषि, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा सामाजिक उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक माना जाता है। आधुनिक तकनीक वैज्ञानिक अनुसंधान, मशीनों और डिजिटल साधनों पर आधारित होती है, जबकि पारंपरिक ज्ञान हमारे पूर्वजों के अनुभव, स्थानीय संस्कृति, प्रकृति की समझ तथा जीवनशैली से प्राप्त होता है। जब इन दोनों का संतुलित समन्वय किया जाता है, तब समाज को अनेक लाभ प्राप्त होते हैं।

1. सतत विकास को बढ़ावा :–

पारंपरिक ज्ञान प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर जीवन जीने की शिक्षा देता है, जबकि आधुनिक तकनीक संसाधनों के बेहतर उपयोग में सहायता करती है। दोनों के समन्वय से जल, भूमि, वन और ऊर्जा संसाधनों का संरक्षण संभव होता है। उदाहरण के लिए, वर्षा जल संचयन की पारंपरिक पद्धतियों को आधुनिक जल प्रबंधन तकनीकों के साथ जोड़कर जल संकट को कम किया जा सकता है।

2. कृषि क्षेत्र में लाभ :–

भारतीय कृषि में पारंपरिक बीज, जैविक खाद और प्राकृतिक खेती की विधियाँ सदियों से उपयोग में लाई जाती रही हैं। आधुनिक तकनीक जैसे ड्रिप सिंचाई, मौसम पूर्वानुमान, ड्रोन और स्मार्ट कृषि उपकरणों के साथ इन विधियों को जोड़ने से उत्पादन बढ़ता है तथा लागत कम होती है। इससे किसानों की आय में वृद्धि होती है और मिट्टी की उर्वरता भी बनी रहती है।

3. पर्यावरण संरक्षण :–

पारंपरिक समाज प्रकृति के संरक्षण को जीवन का हिस्सा मानता था। आधुनिक तकनीक प्रदूषण नियंत्रण, कचरा प्रबंधन और नवीकरणीय ऊर्जा के विकास में सहायक है। जब दोनों का समन्वय होता है, तब पर्यावरणीय समस्याओं का प्रभावी समाधान मिलता है। उदाहरणस्वरूप, सौर ऊर्जा तकनीक को पारंपरिक मिट्टी के घरों की संरचना के साथ जोड़ने से ऊर्जा की बचत होती है।

4. स्वास्थ्य क्षेत्र में सुधार :–

आयुर्वेद, योग और प्राकृतिक चिकित्सा भारतीय पारंपरिक ज्ञान के महत्वपूर्ण भाग हैं। आधुनिक चिकित्सा तकनीक के साथ इनका उपयोग करने से बेहतर स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जा सकती हैं। योग और आधुनिक फिजियोथेरेपी का संयुक्त प्रयोग अनेक रोगों के उपचार में लाभकारी सिद्ध हो रहा है।

5. सांस्कृतिक संरक्षण :–

पारंपरिक ज्ञान किसी समाज की संस्कृति, भाषा और पहचान से जुड़ा होता है। आधुनिक तकनीक के माध्यम से लोक कला, लोक संगीत, हस्तशिल्प और पारंपरिक साहित्य को डिजिटल रूप में सुरक्षित किया जा सकता है। इससे आने वाली पीढ़ियाँ अपनी संस्कृति से जुड़ी रहती हैं।

6. आर्थिक विकास में सहायता :–

पारंपरिक हस्तशिल्प, हथकरघा और स्थानीय उत्पादों को आधुनिक ई–कॉमर्स और डिजिटल मार्केटिंग से जोड़ने पर उनके बाजार का विस्तार होता है। इससे ग्रामीण और स्थानीय कारीगरों को रोजगार मिलता है तथा उनकी आय बढ़ती है।

7. शिक्षा में नवाचार :–

पारंपरिक शिक्षा जीवन मूल्यों, नैतिकता और व्यवहारिक ज्ञान पर आधारित थी। आधुनिक तकनीक ऑनलाइन शिक्षा, स्मार्ट क्लास और डिजिटल सामग्री प्रदान करती है। दोनों के समन्वय से ऐसी शिक्षा प्रणाली विकसित की जा सकती है जो ज्ञान के साथ–साथ संस्कार भी प्रदान करे।

8. आपदा प्रबंधन में उपयोगिता :–

पारंपरिक समुदायों के पास मौसम, जलवायु और प्राकृतिक संकेतों की गहरी समझ होती थी। आधुनिक तकनीक जैसे उपग्रह, सेंसर और चेतावनी प्रणाली के साथ इस ज्ञान को जोड़ने से बाढ़, सूखा और अन्य आपदाओं की बेहतर तैयारी संभव होती है।

9. सामाजिक समरसता और आत्मनिर्भरता :–

पारंपरिक ज्ञान सामूहिकता, सहयोग और स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर बल देता है। आधुनिक तकनीक इन संसाधनों को अधिक प्रभावी और उत्पादक बनाती है। इससे समाज में आत्मनिर्भरता बढ़ती है और स्थानीय समुदाय सशक्त होते हैं।

10. नवाचार और अनुसंधान को प्रोत्साहन :–

जब वैज्ञानिक शोध पारंपरिक अनुभवों के आधार पर किए जाते हैं, तब नए और उपयोगी आविष्कार सामने आते हैं। उदाहरण के लिए, औषधीय पौधों पर आधारित कई आधुनिक दवाइयाँ पारंपरिक ज्ञान से प्रेरित हैं।

9.चुनौतियाँ :–

1. पारंपरिक ज्ञान का दस्तावेजीकरण :–

पारंपरिक ज्ञान सदियों से समाज, समुदाय और परिवारों के माध्यम से मौखिक रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता रहा है। इसमें कृषि पद्धतियाँ, आयुर्वेद, लोक चिकित्सा, जल संरक्षण, हस्तशिल्प, लोककला तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़ी अनेक विधियाँ शामिल हैं।लेकिन आज भी इस ज्ञान का बड़ा भाग लिखित या डिजिटल रूप में सुरक्षित नहीं है। इसके कारण कई समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं:–

- बुजुर्ग पीढ़ी के समाप्त होने के साथ ज्ञान भी समाप्त हो जाता है।

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

- वैज्ञानिक शोध और अध्ययन के लिए पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं हो पाती।
- पारंपरिक विधियों का आधुनिक तकनीक से समन्वय कठिन हो जाता है।
- विदेशी कंपनियाँ इस ज्ञान का उपयोग कर पेटेंट प्राप्त कर लेती हैं, जबकि स्थानीय समुदायों को इसका लाभ नहीं मिलता।

उदाहरण के लिए, भारत में नीम, हल्दी और बासमती चावल से संबंधित पारंपरिक ज्ञान का विदेशी कंपनियों द्वारा पेटेंट कराने का प्रयास किया गया था।इस चुनौती से निपटने के लिए डिजिटल अभिलेख, शोध, स्थानीय भाषाओं में लेखन तथा पारंपरिक ज्ञान डेटाबेस तैयार करना आवश्यक है।

2. तकनीकी और असमानता :–

आधुनिक तकनीक का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँच पाया है। ग्रामीण, आदिवासी और पिछड़े क्षेत्रों में इंटरनेट, बिजली, डिजिटल उपकरण तथा तकनीकी शिक्षा की कमी आज भी एक बड़ी समस्या है।इस असमानता के कारण पारंपरिक ज्ञान रखने वाले समुदाय आधुनिक तकनीकों से जुड़ नहीं पाते।मुख्य समस्याएँ:–

- डिजिटल संसाधनों की कमी
- तकनीकी प्रशिक्षण का अभाव
- आर्थिक कमजोरी के कारण आधुनिक उपकरणों तक पहुँच न होना
- शहर और गाँव के बीच तकनीकी अंतर

इसके परिणामस्वरूप आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान के बीच समन्वय सीमित रह जाता है।उदाहरण के लिए, कई किसान पारंपरिक कृषि ज्ञान तो रखते हैं, लेकिन आधुनिक सिंचाई तकनीक, मौसम पूर्वानुमान या ऑनलाइन बाजार की जानकारी के अभाव में उन्हें उचित लाभ नहीं मिल पाता।इस समस्या के समाधान के लिए डिजिटल साक्षरता, ग्रामीण इंटरनेट सुविधा, तकनीकी प्रशिक्षण तथा सस्ती तकनीकों की उपलब्धता आवश्यक है।

3. जागरूकता की कमी :–

समाज में आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान के महत्व के प्रति पर्याप्त जागरूकता नहीं है।कई लोग पारंपरिक ज्ञान को पुराना और अवैज्ञानिक मानते हैं, जबकि दूसरी ओर कुछ लोग आधुनिक तकनीक को पूरी तरह हानिकारक समझते हैं। यह सोच दोनों के बीच संतुलन बनाने में बाधा उत्पन्न करती है।जागरूकता की कमी के कारण :–

- युवा पीढ़ी पारंपरिक ज्ञान से दूर होती जा रही है।
- लोककला, हस्तशिल्प और पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ धीरे–धीरे समाप्त हो रही हैं।
- पर्यावरण–अनुकूल पारंपरिक उपायों का उपयोग कम हो रहा है।
- वैज्ञानिक और सामाजिक स्तर पर समन्वित दृष्टिकोण विकसित नहीं हो पा रहा।

उदाहरण के लिए, पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियाँ जैसे बावड़ी, तालाब और वर्षा जल संचयन आज भी उपयोगी हैं, लेकिन इनके महत्व के प्रति जागरूकता कम होने से उनका संरक्षण नहीं हो पा रहा।इस चुनौती को दूर करने के लिए शिक्षा, मीडिया, कार्यशालाएँ, शोध कार्यक्रम और जनजागरूकता अभियान आवश्यक हैं।

4. सरकारी नीतियों का सीमित क्रियान्वयन :–

सरकार द्वारा पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक के संरक्षण एवं विकास के लिए कई योजनाएँ बनाई जाती हैं, लेकिन उनका प्रभावी क्रियान्वयन हर क्षेत्र तक नहीं पहुँच पाता।मुख्य समस्याएँ :–

- योजनाओं की जानकारी लोगों तक नहीं पहुँचती।
- भ्रष्टाचार और प्रशासनिक देरी
- ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी
- अनुसंधान और संरक्षण के लिए पर्याप्त बजट का अभाव
- स्थानीय समुदायों की भागीदारी कम होना

इसके कारण कई योजनाएँ केवल कागजों तक सीमित रह जाती हैं।उदाहरण के लिए, जैविक खेती और पारंपरिक बीज संरक्षण को बढ़ावा देने वाली योजनाएँ अनेक क्षेत्रों में उचित प्रशिक्षण और सहायता के अभाव में सफल नहीं हो पातीं।इस समस्या के समाधान के लिए पारदर्शिता, स्थानीय सहभागिता, नियमित निगरानी और प्रभावी प्रशासनिक व्यवस्था आवश्यक है।

5. वैश्वीकरण का प्रभाव :–

वैश्वीकरण के कारण विश्वभर में आधुनिक तकनीक, विदेशी संस्कृति और बाजार का प्रभाव तेजी से बढ़ा है। इससे पारंपरिक जीवनशैली, स्थानीय भाषाएँ और स्वदेशी ज्ञान प्रभावित हो रहे हैं।मुख्य प्रभाव :–

- विदेशी उत्पादों और तकनीकों का बढ़ता उपयोग
- पारंपरिक हस्तशिल्प और घरेलू उद्योगों का कमजोर होना
- स्थानीय संस्कृति और परंपराओं का क्षरण
- युवा पीढ़ी का पश्चिमी जीवनशैली की ओर आकर्षण

इसके कारण पारंपरिक ज्ञान धीरे–धीरे उपेक्षित होता जा रहा है।उदाहरण के लिए, मशीनों से बने सस्ते उत्पादों के कारण हस्तनिर्मित वस्तुओं और कुटीर उद्योगों की मांग कम हो गई है।हालाँकि वैश्वीकरण के कुछ सकारात्मक प्रभाव भी हैं, जैसे पारंपरिक उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलना। लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए स्थानीय संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान की सुरक्षा की जाए।

10 सरकारी पहल :–

भारत सरकार द्वारा भारतीय ज्ञान प्रणाली और आधुनिक तकनीक के समन्वय हेतु विभिन्न पहल की गई हैं।
प्रमुख योजनाएँ :–

ISSN-2319-8478
Vol-15 Issue-3, June 2026

• डिजिटल इंडिया अभियान • राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020• आयुष मंत्रालय • जल शक्ति अभियान • स्मार्ट सिटी मिशन

इन योजनाओं का उद्देश्य तकनीकी विकास को भारतीय परंपराओं और पर्यावरणीय दृष्टिकोण के साथ जोड़ना है।

11.भविष्य की संभावनाएँ :–

भविष्य में आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान का समन्वय सतत विकास का प्रमुख आधार बन सकता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बिग डेटा और इंटरनेट ऑफ थिंग्स जैसी तकनीकों का उपयोग पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में किया जा सकता है।संभावित क्षेत्र :–

• स्मार्ट जैविक खेती • डिजिटल आयुर्वेद • पारंपरिक हस्तशिल्प का ई–कॉमर्स • जलवायु परिवर्तन प्रबंधन

12.सुझाव :–

1. पारंपरिक ज्ञान का डिजिटलीकरण किया जाए।
2. शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान प्रणाली को शामिल किया जाए।
3. ग्रामीण क्षेत्रों में तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान किया जाए।
4. शोध संस्थानों और स्थानीय समुदायों के बीच सहयोग बढ़ाया जाए।
5. पर्यावरण–अनुकूल तकनीकों को बढ़ावा दिया जाए।
6. युवाओं को पारंपरिक ज्ञान से जोड़ने के लिए जागरूकता अभियान चलाए जाएँ।

13.निष्कर्ष :–

आधुनिक तकनीक और पारंपरिक ज्ञान का समन्वय वर्तमान समय की सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है। केवल आधुनिक तकनीक पर आधारित विकास मॉडल पर्यावरणीय संकट और सामाजिक असंतुलन को जन्म दे सकता है, जबकि केवल पारंपरिक पद्धतियाँ आधुनिक आवश्यकताओं को पूर्ण नहीं कर सकतीं। इसलिए दोनों के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।

भारतीय ज्ञान प्रणाली विश्व को सतत विकास, पर्यावरण संरक्षण और मानवीय मूल्यों पर आधारित जीवन शैली की दिशा प्रदान कर सकती है। यदि आधुनिक तकनीक को पारंपरिक ज्ञान के साथ समन्वित रूप में अपनाया जाए, तो यह मानव समाज के लिए अधिक सुरक्षित, संतुलित और समृद्ध भविष्य का निर्माण कर सकता है।

संदर्भ सूची :–

1. शर्मा, आर. (2021), भारतीय ज्ञान प्रणाली और सतत विकास, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
2. सिंह, वी. (2020), पर्यावरण संरक्षण और पारंपरिक ज्ञान, जयपुर, हिंदी ग्रंथ अकादमी।
3. यूनेस्को (2017), पारंपरिक ज्ञान और सतत विकास, पेरिस।
4. भारत सरकार (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 - नई दिल्ली, शिक्षा मंत्रालय।
5. आयुष मंत्रालय (2021), वार्षिक प्रतिवेदन, भारत सरकार।
6. गाडगिल, एम. एवं गुहा, आर. (1995), पारिस्थितिकी और समानता, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. चेम्बर्स, आर. (1983), ग्रामीण विकास, लंदन, लॉन्गमैन प्रकाशन।
8. शिवा, वंदना (1991), हरित क्रांति की चुनौतियाँ, जेड बुक्स।
9. अग्रवाल, ए. एवं नारायण, एस. (1997), डाइंग विजडम, भारत की पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियाँ, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट।
10. कुमार, एस. (2019), "भारत में पारंपरिक जल संरक्षण प्रणालियाँ।" भारतीय पर्यावरण अध्ययन पत्रिका,
11. विश्व स्वास्थ्य संगठन (2020), पारंपरिक चिकित्सा रणनीति, जेनेवा।
12. पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (2022), भारत की पर्यावरण रिपोर्ट, नई दिल्ली।
13. पटेल, आर. (2018), जैविक खेती और सतत कृषि, नई दिल्ली।
14. खाद्य एवं कृषि संगठन, (2019), जलवायु–स्मार्ट कृषि स्रोत पुस्तक, रोम।
15. आईपीसीसी (2021), जलवायु परिवर्तन रिपोर्ट, जेनेवा।
16. गुप्ता, ए. के. (2001), ग्रासरूट नवाचार और भारतीय परंपरा, अहमदाबाद, सृष्टि प्रकाशन।
17. जैन, पी. (2020), "सतत विकास में तकनीक की भूमिका।" सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका,
18. संयुक्त राष्ट्र संगठन (2015), सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट, न्यूयॉर्क।